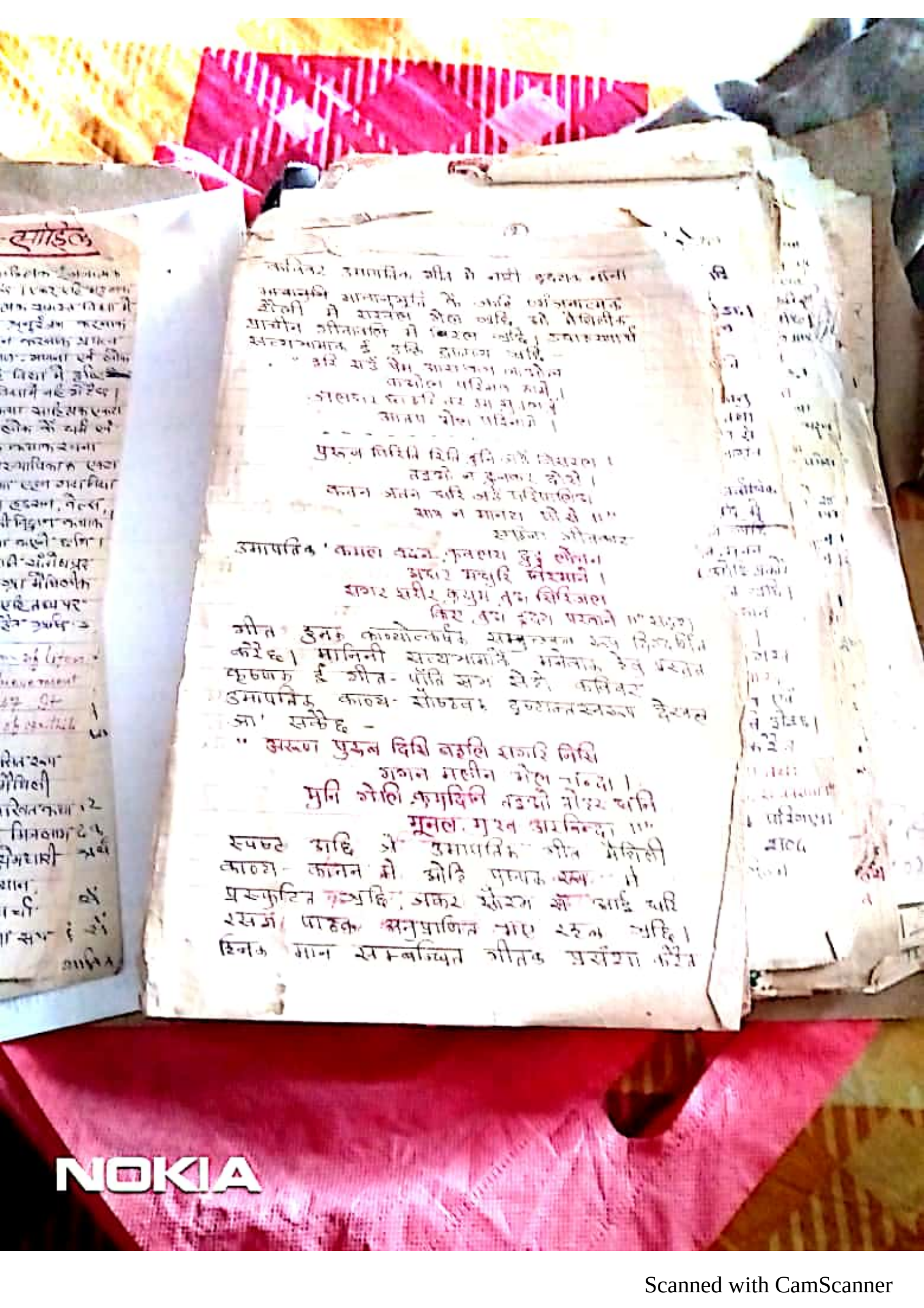

(२)

कविवर उमापतिक गीत मे नारी हृदयक वाणी अत्यानुभूति भावानुभूति मे जाहि प्रभिव्यंजनात्मक शैली मे व्यक्त भेल अछि, से मैथिलीक प्राचीन गीतिकाव्य मे विरल अछि। उदाहरणार्थ [illegible] कैं [illegible] अछि —

" [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ।

- - - - - - - -

पुरुष [illegible] [illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] परिपालित,
[illegible] ॥"

[illegible]

उमापतिक 'कमल वदन कुवलय दुहु लोचन
अधर मधुरि निरमाने ।
सगर शरीर कुसुम [illegible]
[illegible] ॥" [illegible]

गीत हुनक काव्योत्कर्षक सम्पूर्णता [illegible] करैछ। मानिनी सत्यभामाक मनोभावक [illegible] ई गीत- पंक्ति [illegible] कविवर उमापतिक काव्य- सौष्ठवक दृष्टान्तस्वरूप देखल जा' सकैछ —

" अरुण पुरुब दिशि बहलि सगरि निशि
गगन मलीन भेल चन्दा ।
मुनि गेलि कुमुदिनि तइओ तोहर धनि
मूनल मुख अरविन्दा ॥"

स्पष्ट अछि जे उमापतिक गीत मैथिली काव्य- कानन मे ओहि पुष्पक [illegible] प्रस्फुटित भेल अछि, जकर सौरभ सँ आइ धरि रसज्ञ पाठक अनुप्राणित भए रहल अछि। हिनक [illegible] सम्बन्धित गीतक प्रशंसा करैत

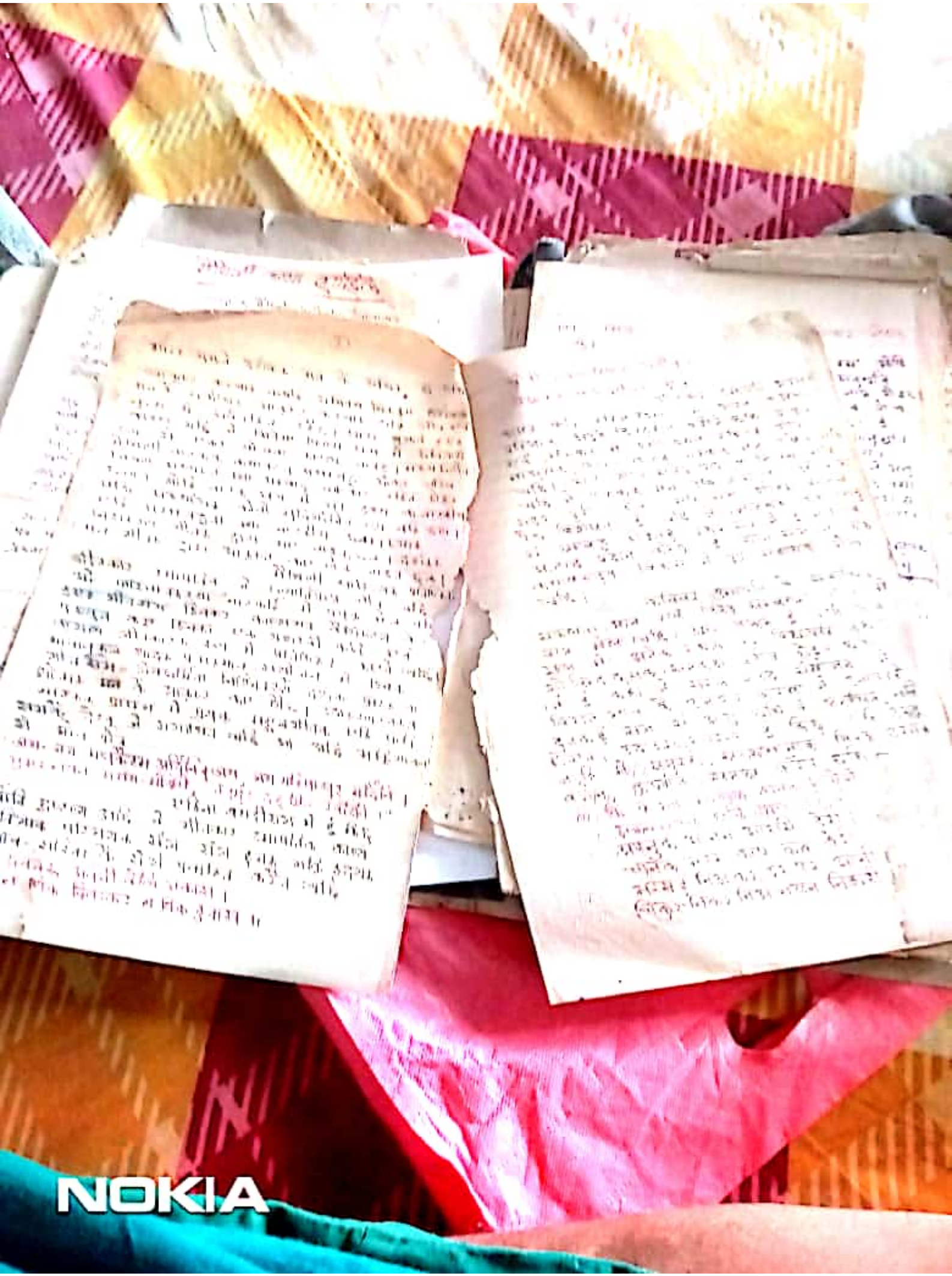

Scanned with CamScanner

प्रश्न- उमापति एक उत्कृष्ट गीतकार छलाह - उक्ति 'पारिजातहरण' नाटकक आधार पर एहि कथनक समीक्षा करू।
उमापतिक प्रधान काव्य प्रतिभाक परिचय दिअ।

नाट्य परम्पराक प्रवर्तक मैथिलीक मध्यकालीन रचनाकार कविवर उमापतिक स्थान मैथिलीक प्राचीन कविलोकनिक मध्य किनको सँ न्यून नहि अछि। वास्तव मे महाकवि विद्यापति एवं गोविन्द दासक संग आदि कविक नाम आदरक संग लेल जाइछ मैथिली मे उमापतिक सर्वोत्कृष्ट स्थान अछि। हिनका एक कविक रूप मे ख्याति प्रदान करबाक मुख्य श्रेय अछि- पारिजात हरण नाटक मे प्रयुक्त गीत सभ कें। वास्तव मे पारिजातहरण सन सुन्दर छोटछीन नाटक मे एव गीत गीत सन्निहित अछि आ एहि सभ गीत मे उमापति एक उत्कृष्ट गीतकारक रूप मे अपना कें प्रस्तुत करने छथि।

प्रस्तुत कृति: पारिजातहरणक नाटकीयता पर विचार करबाक क्रम मे ई स्पष्ट भए जाइछ जे एहि मे नाटकीय दशा दिशाक कोनो तेहन निर्वहन नहि जे एकरा नाटक कहल जाए। एहि प्रसंग स्व० प्रो० रमानाथ झाक कथन सर्वथा उचित प्रतीत होइछ जाहि मे ओ मध्यकालीन मैथिली नाटक कें नाटक नहि नाच कहने छथि। ई एहि नाच मे किछु अभिनय तत्त्व समायोजन कए मध्यकालीन मैथिली नाटकक लोकनि एकरा नाटकक श्रेणी मे रखबाक चेष्टा कएलनि से ओ रम ई कही जे इएह चेष्टा मैथिली नाट्य साहित्यक प्राचीन एवं गौरवशाली नाट्य परम्परा मे सहायक भेल तें अनुचित नहि होएत।